करन सिंह परिहार

जन्मस्थान- पिण्डारन (बाँदा)
प्रकाशन- विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित
सम्मान- अनेक साहित्यिक एवं सामाजिक सम्मानों से सम्मानित
सम्प्रति-कृषि कार्य

कर्मों का इतिहास अटल है

जिनका हर विश्वास अटल है।
कर्मों का इतिहास अटल है।
खेतों के उन योद्धाओं से ,कैसे आँख मिला पाओगे?
बोलो आँख मिला पाओगे।

जिसने सिंचित किया धरा को, रोम छिद्र के बहते जल से।
जिसने भूख मिटाई सबकी , निज फौलादी पौरुष बल से।
उन कृषकों की विपदाओं से , कैसे आँख मिला पाओगे?
बोलो आँख मिला पाओगे।
जिन पर नित संत्रास अटल है।
जिन पर नित्य प्रहास अटल है।
सहनशील उन प्रतिभाओं से, कैसे आँख मिला पाओगे?
बोलो आँख मिला पाओगे।

धूप ओढ़कर जिसने बीना, राज पथों के कंकड़ पत्थर।
मीलों मार्ग बनाया जिसने , नग्न पदों से पैदल चलकर।
उन पैरों की पीड़ाओं से , कैसे आँख मिला पाओगे?
बोलो आँख मिला पाओगे।
जिन नयनों की प्यास अटल है।
इक रोटी की आस अटल है।
उन श्रमिकों की आशाओं से , कैसे आँख मिला पाओगे?
बोलो आँख मिला पाओगे।

घोर वेदना सहकर जिसने , घास फूस में जीना सीखा।
सूखी फसलें देख देख कर, दुख के आँसू पीना सीखा।
उन माथों की तृष्णाओं से , कैसे आँख मिला पाओगे?
बोलो आँख मिला पाओगे।
जिनका नित उपवास अटल है।
पीड़ा का एहसास अटल है।
उन उदरों की बाधाओं से, कैसे आँख मिला पाओगे?
बोलो आँख मिला पाओगे।

रहीं व्यथित मन की पीड़ाएं

एकाकीपन लिए विचरती
रहीं व्यथित मन की पीड़ाएं।
पर विह्वल अधीर उर को हम
किंचित धीर नहीं दे पाए।

जीवन जीने की आतुरता
आखिर कितनी तृष्णा सहती।
रह कर मौन भला आकांक्षा
कब तक अपने कष्ट न कहती।
तृप्ति हेतु मन मृग ने जाने
कितने तप्त मरुस्थल मापे ।
लेकिन प्यासे अधरों को हम
गंगा नीर नहीं दे पाए।।

बँधी वेदना आलिंगन से
क्यों न भला प्रतिरोध करेगी।
अखबारों के मुख पृष्ठों पर
कब कृषकों की व्यथा छपेगी।
संघर्षों को लाद पीठ पर
न्यायालय के चक्कर काटे।
सिद्ध करे निर्दोष किसी को
वो तहरीर नहीं दे पाये।।

अनुनय-विनय भरा सम्वेदन
मारा-मारा घूम रहा है।
पाने को अधिकार यथोचित
रावण के पग चूम रहा है।
अमिय नाभि का दशकंधर की
सोख सके जो छूट धनुष से,
हम अधर्म के संहारक को
ऐसा तीर नहीं दे पाए।।

ISSN:2583-8849